REET 2025
LEVEL-1 & 2
ROJGAR ANKIT
वंदन बैच
हिंदी
भाषा शिक्षण के उपागम
LIVE
31-12-2024 11:00 AM

REET 2025 L-1&2 हिंदी भाषा शिक्षण के उपागम

- भाषा मूलत: व्यवहार और प्रयोग का विषय है। भाषिक तत्वों का ज्ञान भाषा के व्यवहार और प्रयोग की दक्षता विकसित करने में नींव का काम करता है। इसके आधार के बिना भाषा की व्यावहारिक कुशलता विकसित नहीं हो सकती। अत: भाषिक तत्वों के ज्ञान को व्यवहार और प्रयोग में लाने का सतत अभ्यास अपेक्षित है।
- भाषिक तत्वों- ध्वनि, शब्द और वाक्य के प्रयोगात्मक और क्रियात्मक शिक्षण के प्रमुख दो उपागम हैं-
  - (1) पाठ संसर्ग उपागम
  - (2) रचना शिक्षण उपागम।

सम्बन्ध | संयोग | मिलाप शिक्षण की प्रणाली को

➪ पाठ संसर्ग उपागम का तात्पर्य है- पाठ्यपुस्तक के पाठों को पढ़ाते समय यथासंभव भाषिक तत्वों (भाषा के तत्वों) की शिक्षा प्रदान करना, पाठ में प्रयुक्त शब्दों और वाक्यों के आधार पर उच्चारण, शब्दार्थ, शब्द रचना, वाक्य संरचना संबंधी दक्षताओं को विकसित करना। इसी प्रकार मौखिक और लिखित रचना शिक्षण में इन भाषिक तत्वों के ज्ञान और प्रयोग का प्रचुर अवसर मिलता है। भाषिक तत्वों के शिक्षण के उपर्युक्त दोनों उपागमों का प्रयोग करते समय यह ध्यान रखा जाना आवश्यक है कि भाषिक कार्य व्यावहारिक हो, विषय-वस्तु ग्रहण करने में सहायक हो, प्रसंगानुकूल हो और पाठ्यविषय अथवा रचना विकास से सम्बद्ध हो।

विषय से सम्बन्धित

भाषा शिक्षण के उपागम हैं?

A- पाठ संसर्ग उपागम

B- रचना शिक्षण उपागम

C- A और B दोनों

D- इनमें से कोई नहीं।

अर्थ ग्रहण करके एक निश्चित उद्देश्य पढ़ना

पाठ शिक्षण के तहत पठित वस्तु का

बच्चों को विभिन्न उद्देश्यों से सम्बन्धित मौलिक विचारों को स्वतन्त्रता पूर्वक लिखित रूप में अभिव्यक्ति करना सिखाया जाता है

वर्तनी शिक्षण- पाठ संसर्ग उपागम द्वारा **वर्तनी शिक्षण** का अवसर कम मिलता है। गद्य पाठों को पढ़ते समय भाषा कार्य के अन्तर्गत यथाप्रसंग हम ऐसे शब्दों की ओर विद्यार्थियों का ध्यान आकृष्ट कर सकते हैं जिनके लिखने में वर्तनी की अशुद्धियों की सम्भावना रहती है। ऐसे शब्दों को श्यामपट्ट पर भी लिख देना चाहिए। भाषा कार्य में शब्द रचना, संधि, समास, उपसर्ग, प्रत्यय आदि के प्रसंग में परिवर्तित शब्दों की शुद्ध वर्तनी की ओर भी ध्यान दिलाया जा सकता है।

परम + ईश्वर = परमेश्वर

REET 2025 L-1&2 हिंदी भाषा शिक्षण के उपागम

शब्द शिक्षण- शब्द शिक्षण की दृष्टि से पाठ-संसर्ग उपागम का प्रयोग विशेष उपयोगी है क्योंकि पाठ पढ़ाते समय स्वाभाविक रूप से शब्द- शिक्षण के अवसर मिल जाते हैं। पाठ संसर्ग उपागम के अंतर्गत शब्द शिक्षण की अनेक युक्तियाँ अपनाई जा सकती हैं-

- **शब्द के अर्थ बोध द्वारा शब्द शिक्षण-** पाठ शिक्षण के समय पर्यायवाची, अनेकार्थी, विलोमार्थी, रूढ़ार्थी, प्रतीकात्मक और पारिभाषिक शब्दों को पाठ में यथाप्रसंग बताकर शब्दार्थ बोध कराया जा सकता है।

शब्द रचना द्वारा शब्द शिक्षण- शब्द रचना का ज्ञान शब्दार्थ और शब्द भंडार वृद्धि दोनों में सहायक होता है। शब्द रचना तीन प्रकार से होती है- उपसर्ग लगाकर, प्रत्यय लगाकर और समास द्वारा।

श्रेष्ठ

विशिष्ट शब्द प्रयोगों के ज्ञान द्वारा शब्द शिक्षण : पाठ में यदि लक्षक और व्यंजक शब्द आएँ तो उनके लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ स्पष्ट कर सामान्य अर्थ से उनका अंतर स्पष्ट किया जाता है। यदि कहावतों और मुहावरों का प्रयोग हुआ है तो अर्थ स्पष्ट करते हुए उनमें प्रयुक्त शब्दों की ओर ध्यान दिलाया जाता है।

REET 2025 L-1&2 हिंदी भाषा शिक्षण के उपागम

वाक्य शिक्षण - निबंधात्मक पाठों के शिक्षण में वाक्य शिक्षण का यथेष्ट अवसर मिलता है। अत: इस दृष्टि से पाठ-संसर्ग उपागम का विशेष महत्व है। वाक्य शिक्षण के लिए विषय वस्तु बोध एवं विचार विश्लेषण संबंधी कार्य करते समय शुद्ध वाक्यों में ही उत्तर देने या कथन प्रस्तुत करने पर बल दिया जाना चाहिए। प्राय: यह देखा जाता है कि हम पाठ विकास में शीघ्रता के कारण शिक्षार्थियों के उत्तर अपूर्ण या बेमेल या शिथिल वाक्यों में स्वीकार कर लेते हैं और आगे बढ़ जाते हैं। इससे शिक्षार्थियों में अधूरे या अशुद्ध वाक्य रचना की गलत आदत पड़ती है। इसका अवसर कदापि नहीं दिया जाना चाहिए।